एक महान जीवन

यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान

बच्चों के शिक्षकगणों को इस अध्ययनमाला से **J1b** पढ़ना चाहिये

प्रार्थना :''स्वर्गिय पिता, दया कीजिए कि मैं और मेरा झुण्ड प्रभु यीशु के अनूठे जीवन से, जो उन्होंने संसार में व्यतीत किया, शिक्षा प्राप्त कर सकें ताकि हम सब मिलकर उस कार्य के लिए जो यीशु ने हमारे लिए किया आपको धन्यवाद दे सकें।''

1. महानतम जीवन के विषय शिक्षा देने से पूर्व अपने मन और हृदय को वचन से भली भांति तैयार कीजिए।

यीशु का सुसमाचार अपने झुण्ड के सदस्यों को इस प्रकार सिखाएं कि वे दूसरों को भी सिखाने योग्य बन सकें।

यीशु के आगमन से पूर्व पुराने नियम के नबियों ने 300 से अधिक भविष्यवाणियां उसके विषय में कहीं जिसे वे मसीह या ख्रीस्ट की संज्ञा देते थे।

निम्नलिखित 7 (सात) भविष्यद्वक्ताओं ने प्रतिज्ञात मसीह (ख्रीस्ट) के विषय में, जो संसार में आने वाला था, क्या कहा था?

अ) अब्राहम (उत्पत्ति 22:18)

ब) मूसा (व्यवस्था विवरण 18:18-19)

स) यशायाह (यशायाह 53:7-8)

ड) दाऊद (भजनसंहिता 2:7)

इ) दाऊद (भजनसंहिता 16:8-11)

ई) नातान (2 शामूएल 7:16)

उ) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (लूका 3:15-17)

जब मसीह संसार में आया, अनेकों ने उसे देखा, सुना और कुछ गवाहों ने उस सारे अनुभवों को नया नियम में लिख दिया। यीशु के शिष्यों ने यीशु के बारे में सात महत्वपूर्ण बातें जो उनकी दृष्टि में सत्य थीं बताईं :

अ) यीशु ने इस संसार में अपने कार्यों द्वारा जो उसने मानव जाति के लिए किए, प्रकट किया कि वह कौन है। निम्मलिखित बाईबल-पदों में देखें कि यीशु ने क्या किया :

- अन्धे व्यक्तियों के लिए (मत्ती 9:27-31)
- दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति के लिए (मत्ती 9:32-33)
- एक मृतक बालक के लिए (लूका 8:49-55)

ब) यीशु ने लोगों को परमेश्वर की पवित्रता के विषय शिक्षा दी, कैसे विश्वास रखा जाए यह बताया, तथा किस प्रकार पवित्र और आनन्दित जीवन व्यतीत किया जाए, बताया। उन्होंने साधारण वस्तुओं के दृष्टान्त देकर शिक्षा दी जैसे बीज बोने वाले को दृष्टान्त। ये बाइबल पद देखें।

- परमेश्वर इस प्रकार के लोगों को आशीष देता है (मत्ती 5:1-16)
- यीशु के चेलों को कैसा जीवन व्यतीत करना चाहिए (यूहन्न 14:1-17)

- संसार का भविष्य कैसा होगा (मत्ती 25:31-46)

स) जब यीशु को शत्रुओं ने क्रूस पर ठोंक दिया तो उनकी मृत्यु हो गई। इन पदों में देंखे :

- कौन यीशु को घात करना चाहते थे? (लूका 23:12-21)
- यीशु किस प्रकार घात किए गए (लूका 23:32-34)
- यीशु किस प्रकार मरे (लूका 23:44-53)

ड) तीन दिन के बाद परमेश्वर ने यीशु को जिलाया :

- अपनी मृत्यु से पहले जैसा यीशु ने कहा था (मरकुस 9:31-32)
- जैसा स्वर्गदूत ने कहा (मत्ती 28:1-10)
- अपने जी उठने के बाद जैसा यीशु ने समझाया (प्रकाशिवाक्य 1:17-18)

इ) यीशु अनेकों लोगों पर प्रकट हुए जो उन्हें जानते थे और उसके शिष्य कहलाते थे। देंखे :

- यीशु ने कैसे सिद्ध किया कि वे जीवित हैं? (लूका 24:36-43)
- यीशु ने किस विषय पर बातचीत की (प्रेरि. 1:1-3)
- किन पर वह प्रकट हुआ (1 कुरि. 15:3-8)

ई) यीशु ने प्रतिज्ञा की कि जो मन फिराएगा वह क्षमा पाएगा। इन पदों में देखें कि जीवित प्रभु ने क्या कहा था :

- पाप क्षमा के विषय (लूका 24:44-48)
- परमेश्वर के पवित्रात्मा के विषय में (प्रेरि. 1:4-8)
- यीशु के चेले बनने के विषय में (मत्ती 28:16-20)

उ) दुबारा लौटने तक परमेश्वर ने यीशु को स्वर्ग पर उठा लिया। इन पदों में देखें :

- यीशु के चेलों से स्वर्गदूतों ने क्या कहा (प्रेरि. 1:9-11)
- यीशु ने अपने शत्रुओं से क्या कहा (मरकुस 14:60-62)
- जिन्होंने दूसरों की सेवा की, उनसे यीशु क्या कहेगा? (मत्ती 25:31-34)

2. अपने सहकर्मियों के सहयोग से आगामी सप्ताह की गतिविधियों की योजना बनाएं।

- यीशु के संबंध में सात सत्य बातों से संबंधित चित्र बनावाएं। अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर यीशु के विषय मुख्य बातें बताने का अभ्यास करें। तब जाएं और लोगों के घरों में जाकर बताएं। बताते समय जो चित्र बनाया है दिखाएं।
- ट्रेनिंग सेमिनार आयोजित करने की योजना बनाएं ताकि आप बता सकें कि किस प्रकार चित्रों, गीतों, कविताओं आदि के माध्यम से यीशु की कहानियां बताई जा सकती हैं, जो उनकी संस्कृति के अनुकूल हो।

3. आने वाली आराधना सभा की तैयारी अपने सहयोगियों के साथ करें।

ऐसी गतिविधि चुनें जो तत्कालिन आवश्यकता व स्थानीय संस्कृति के अनुसार उपयुक्त हो।

जो अध्ययन आपने भाग-1 में किया है, उसके आधार पर यीशु के जीवनकाल की घटनाओं पर एक पर दो नाटक प्रस्तुत करें।

यीशु के शिष्य सात महत्वपूर्ण बातें बताएं जो आपने भाग-1 में सीखी हैं। तथा प्रश्न भी पूंछे, बच्चों को कहें कि जो जानते हैं वही बताएं। जो नहीं जानते तो कह दें।

- किस नशी ने यीशु के विषय भविष्यवाणी की।
- यीशु ने मानवजाति के लिए क्या किया।
- संसार का भविष्य में क्या होगा तथा हमें कैसे जीवन व्यतीत करना चाहिए, इस विषय में यीशु ने क्या शिक्षा दी।
- यीशु कैसे मरे व जीवित हो गए।
- जीवित होने के बाद यीशु किन पर प्रकट हुए।
- जीवित यीशु ने उन विश्वासियों के लिए क्या प्रतिज्ञा की जो पश्चात्ताप् करके उसके पीछे हो लिए हैं।
- अंत में यीशु ने यह संसार कैसे छोड़ा।

बच्चों को अवसर दीजिए कि जो कविता, नाटक, प्रश्न आदि उन्होंने तैयार किया है, प्रस्तुत करें।

प्रभु–भोज के लिए इब्रानियों 7:7–12 पढ़ें। समझाएं कि अपने पिता की उपस्थिति में यीशु का लहू लेकर नहीं गए, जैसे महायाजक पुराने नियम में जाया करता था, परन्तु अपने ही लहू को लेकर परम पवित्र स्थान में गया। आप उन पदों को भी पढ़ सकते हैं जिनका अध्ययन आपने प्रथम भाग में किया है, जो यीशु की क्रूस मृत्यु तथा पुन: आगमन के विषय में बताते हैं।

साथ मिलकर कंठस्थ करें : **इब्रानियों 1:1–2**

सारे लोग एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने के लिए छोटे समूहों में एकत्रित हों, प्रभु से प्रार्थना करें कि यीशु की कथा प्रत्येक परिवार और मित्रों तथा नास्तिक समूहों तक व हर स्थान पर पहुंचाई जा सके।